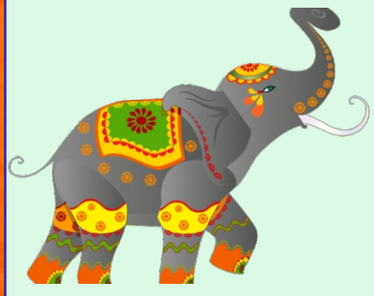

अन्तर्राष्ट्रीय-संगोष्ठी
(International Seminar)

संस्कृत-साहित्य में बौद्ध-परम्परा का योगदान
(Contribution of Buddhist tradition to Sanskrit literature)

(30 जनवरी, 2019 से 31 जनवरी, 2019 तक)

आयोजक तथा अध्यक्ष

प्रो. के.बी. सुब्बरायुडु

संयोजक

डॉ. कृपा शंकर शर्मा

डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल

सह-संयोजक

डॉ. दिनेश चन्द्र पाण्डेय

साहित्य-विभाग

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

(राष्ट्रिय मूल्यांकन प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'ए'-श्रेणी में प्रत्यायित,
भारत शासन-मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के अधीन सम विश्वविद्यालय)

श्रीरघुनाथ-कीर्ति-परिसर

देवप्रयाग, पौड़ी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड–249 301

01375 266028

email-srkcampus@gmail.com

www.srkcampus.org

।। प्रास्ताविक।।

प्रस्तावना–

संस्कृत-वाङ्मय में अनेक विषयों, शास्त्रों तथा दर्शनों पर विविध विधाओं और उपविधाओं में साहित्य रचा गया। इसमें वैदिक धर्म के साथ बौद्ध और जैन धर्म पर भी साहित्य उपनिबद्ध किया गया। विदित ही है कि जैन आचार्यों और कवियों का संस्कृत-साहित्य परम्पराया में अप्रतिम योगदान है। इसी प्रकार अनेक बौद्ध-कवियों और आचार्यों ने संस्कृत में साहित्य-प्रणयन करके संस्कृत-वाङ्मय को विवर्धित किया। बौद्धकवियों ने विशेषतः भगवान् बुद्ध के चरित तथा दर्शन के विषय में अपनी रचनाओं में वर्णन किया। हम बौद्ध काव्यकृतियों को भगवान् बुद्ध के व्यक्तित्व और उनके धर्म का साकार स्वरूप कह सकते हैं; क्योंकि इन काव्यों में दोनों ही प्रतिफलित हुए हैं। यद्यपि शास्त्र 'कटुकौषधिवत्' होता है, जिसका आस्वादन साहित्य के माध्यम से सरल होता है। प्रायशः समस्त बौद्ध काव्य-कृतियाँ तथागत बुद्ध के विचारों और सिद्धान्तों की स्वरूप-भूत हैं। बुद्ध-वचनों का बाद में रचे गये संस्कृत-साहित्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा। यद्यपि भगवान् बुद्ध ने जन-भाषा मागधी (पालि) में धर्मदेशनाएँ दीं; किन्तु परवर्ती बौद्ध-कवियों और आचार्यों ने दार्शनिक-तत्त्वों के प्रसार के लिए संस्कृत का आश्रय लिया। विशेष-रूप से बौद्ध-धर्म की महायान-परम्परा ने संस्कृत को गृहण किया। फलतः संस्कृत-माध्यम से विपुल साहित्य-रचना हुई तथा बुद्ध-धर्म का प्रचार हुआ। प्रकारान्तर से इन सब से संस्कृत की अभिवृद्धि ही हुई। प्रसङ्गतः बौद्ध संस्कृत-साहित्य में बौद्ध-राजाओं, महापुरुषों तथा श्रेष्ठविभूतियों का भी वर्णन हुआ है।

बुद्धानुयायियों, मनीषियों तथा कवि के द्वारा दो प्रकार से संस्कृत-भाषा को अपनी काव्य-रचना-कर्म का माध्यम बनाकर साहित्य रचा गया–1. विशुद्ध-संस्कृत और 2. मिश्रित-संस्कृत। इसमें एक ओर अश्वघोष व शान्तिदेव जैसे महान् कवियों तथा दिङ्नाग व धर्मकीर्ति जैसे दार्शनिकों ने विशुद्ध-संस्कृत में साहित्य-रचना कीं; तो दूसरी ओर मिश्रित-संस्कृत में वैपुल्यसूत्र, जातक व अवदानादि साहित्य रचा गया। अश्वघोष-कालीन भारत में घर-घर में उनकी रचनाएँ गायी जाती थीं। हुएनसांग के मतानुसार–अश्वघोष, आर्यदेव, नागार्जुन और कुमारलात–ये चारों साहित्याकाश के 'देदीप्यमान चार सूर्य' हैं, जिन्होंने विश्व को प्रकाशित किया। इसमें महाकाव्य, रूपक, गद्यसाहित्य तथा चम्पूकाव्य रचे गये। बुद्धचरित, सौन्दरनन्द, पद्यचूडामणि, कल्पनामण्डतिका, कण्फिणाभ्युदय, बोधिसत्त्वावदानमाला इत्यादि अनेक काव्य इसमें उपलब्ध होते हैं। बौद्ध संस्कृत-साहित्य में तो असंख्य काव्य प्रापत होते हैं। इसमें प्राप्त होने वाले बौद्ध संस्कृत-स्तोत्र तथा स्तव अत्यन्त रम्य हैं। आधुनिक संस्कृत-साहित्य में भी पुष्कल मात्रा में काव्य रचे गये हैं। दूसरी ओर मिश्रित-संस्कृत में भी अतीव मञ्जुल साहित्य विरचित हुआ। यह मिश्रित-संस्कृत पालि और संस्कृत के मिले-जुले रूप के कारण इसे विदेशी अनुसन्धाताओं तथा विद्वानों ने 'बौद्ध-मिश्रित-संस्कृत-साहित्य' (Buddhist Hybrid Sanskrit Literature) कहा। यह बौद्ध संस्कृत-साहित्य अत्यन्त विशाल एवं विस्तृत है। यह साहित्य द्वादश अगों में प्राप्त होता है। तद्यथा–

सूत्रं गेयं व्याकरणं गाथोदानावदानकम्।
इतिवृत्तकं निदानं वैपुल्यं च सजातकम्।
उपदेशाद्भुतौ धर्मौ द्वादशाङ्गमिदं वचः।।

बौद्ध संस्कृत-कवियों ने एक ओर अपनी काव्य-वीणा से दार्शनिक और धार्मिक गीतों की झंकार से काव्य-मर्मज्ञ रसिकों को चित्त को आह्लादित किया; तो दूसरी ओर साहित्यिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिकादि दृष्टि से अपनी यशोदुन्दुभिः भी बजायी। इस साहित्य में आलङ्कारिक-तत्त्व को स्पष्टतया देखा जा सकता है। बौद्ध-कवियों ने भारत के बाहर सुदूरवर्ती देशों में भी इन बारह अंगों के आधार पर कल्याणमय बौद्धधर्म की कीर्ति-पताका को फहराकर विश्व के समक्ष सम्यक् सम्बुद्ध की अनुपम जीवन-गाथा, उदात्त-चरित तथा उनके लौकिक-अलौकिक गुणों का आदर्श उपस्थापित करके भारत-माता के मस्तक को ऊँचा किया। किन्तु, अहो! यह दुःख की बात है कि बुद्ध द्वारा उद्भावित धर्म की तरह, बौद्ध काव्य-कृतियाँ भी इस भारत-भूमि में समुचित सम्मान की पात्र न बन पायीं, जिस कारण हम बौद्ध काव्यकारों एवं कवियों के वचनामृत से वञ्चितप्राय ही हो गये। एक आर्यमञ्जुश्रीमूलकल्प को छोड़कर एक भी बौद्ध-ग्रन्थ इस देश की परिधि में प्राप्त नहीं हुआ। आज जो भी बौद्ध-साहित्य उपलब्ध होता है, उसका पूरा श्रेय भारतविद्या के समुपासक विदेशी विद्वानों को ही जाता है। उनके महत् प्रयासों से अज्ञान-तिमिर में विलीन बौद्ध-ग्रन्थों की रक्षा हो सकी, उनमें भी कुछेक ग्रन्थ ही प्रकाशित हो पाये हैं। इन ग्रन्थों के प्रकाशित होने पर भी, अब तक बौद्ध-साहित्य के धरातल पर स्वच्छन्दतया प्रवाहमान बौद्ध-काव्य मन्दाकिनी के परम पवित्र अमृत-वारि के रसास्वादन का सौभाग्य सहृदय साहित्य-समीक्षककों को सुलभ न हो सका।

बौद्ध-परम्परा ने काव्य-शास्त्र की दृष्टि से संस्कृत-साहित्य को बहुत कुछ नया दिया है। शान्त-रस का प्रादूर्भाव बौद्ध- परम्परा का संस्कृत काव्य-शास्त्र में विशिष्ट अवदान है। नाट्य-शास्त्र में आठ रसों का ही उल्लेख है। जब बौद्ध-धर्म सम्बद्ध काव्य रचे गये, तब

काव्यशास्त्र की परम्परा में शान्तरस का विवेचन प्रारम्भ हुआ। बौद्धपरम्परा के प्रभाव से ही तो प्रतीत्य-समुत्पाद के सन्दर्भ में रसों को समझ सकते हैं। इसी प्रकार न्याय-परम्परा में भी बौद्धदर्शन का विशिष्ट योगदान है; जो कि अलङ्कार-शास्त्र के विकास में सहकारी हुआ। महान् आलङ्कारिक आचार्य भामह और दण्डी बुद्धमत के अनुयायी थे—ऐसा विद्वानों का विचार है। मम्मट आदि आचार्यों ने बौद्धदर्शन के सन्दर्भ में अपनी चिन्तन-सरणि को बढ़ाते हुए शब्दशक्तियों का विवेचन प्रस्तुत किया। इस परम्परा में सुबोधालङ्कार तथा स्वाभाषालङ्कार नामक अलङ्कार-ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार छन्दोरत्नाक नामक छन्दःशास्त्रीय ग्रन्थ भी प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार, विविध कालों में इस बौद्ध-मिश्रित-संस्कृत-साहित्य का भोट और चीनी भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। विद्वानों द्वारा इन भोट तथा चीनी भाषाओं में उपलब्ध साहित्य का संस्कृत-भावानुवाद किया गया; जिससे हमारे हाथों से गई हुई मूल्यवान् सम्पद् पुनः हस्तगत हो गई। जैसे कि महाकवि अश्वघोष रचित 'बुद्धचरित' के पूर्वार्द्ध-भाग के कुछ खण्डित श्लोकों सहित 14 सर्गात्मक उत्तरार्द्ध-भाग इसी प्रकार महान् प्रयत्नों से संस्कृत में रचा जा सका। जॉन्स्टन नामक विदेशी विद्वान् ने भोट व चीनी भाषाओं में प्राप्त बुद्धचरित का अंग्रेजी में अनुवाद कर प्रकाशित किया, जिसका आचार्य सूर्यनारायण चौधरी ने हिन्दी अनुवाद किया। इस पश्चात् आचार्यों ने इस हिन्दी अनुवाद से संस्कृतापद्यानुवाद किया। ऐसे हजारों ग्रन्थ भोट और चीनी भाषा में प्राप्त होते हैं। उनका संस्कृत-भाषा में पुनः छायानुवाद आवश्यक है।

संस्कृत-काव्यशास्त्र की दृष्टि से जब हम बौद्ध काव्यों या साहित्य का अनुशीलन और समीक्षण करते हैं, तब ज्ञात होता है कि साहित्य-जगत् की अन्य कृतियों की तरह इनमें सभी काव्य-गुण प्राप्त होते हैं। रस, छन्द, अलङ्कार तथा गुणादि दृष्टि से यह बौद्ध संस्कृत-काव्य श्रेष्ठ-काव्य सिद्ध होता है। इसी कारण विश्व-साहित्य में इन बौद्ध-कृतियों का महत्त्वपूर्ण सीान है। भगवान् बुद्ध की देशनाएँ सम्पूर्ण विश्व-समाज को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक सूत्र में बाँधती हैं। अतः इस बौद्ध-साहित्य को 'विश्वसाहित्य' के नाम से पुकारा जा सकता है।

इस प्रकार हजारों ग्रन्थ अनुवाद, अनुसन्धान और समालोचना के अभाव में उपेक्षित हैं। इनके अनुवाद और अनुसन्धान से निश्चित ही भारतीय इतिहास और संस्कृति अनुद्घाटित पक्ष समधिक स्पष्टतर होंगे तथा इससे इस विषय में और भी अनेक नवीन साहित्य-विषयक आयाम समुद्घाटित होंगे। इसी प्रकार के महान् कार्य को सफल करने, विचारों को उपस्थापित करने तथा प्रचार की दृष्टि यह अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जा रही है—भारत शासन के मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के अन्तर्गत आने वाले राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान के देवप्रयागस्थ श्रीरघुनाथ-कीर्ति-परिसर के साहित्य-विभाग द्वारा। 30-31 जनवरी, 2019 को यह अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी परिसर में समायोजित की जायेगी।

ध्यातव्य है कि राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान संस्कृत के साथ पालि एवं प्राकृत भाषाओं के अध्ययन, अनुसन्धान एवं संवर्धन के लिए कृतसंकल्प है। वर्तमान में, संस्थान पालि एवं प्राकृत भाषाओं के साहित्य की संस्कृतच्छाया के साथ हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद में संलग्न है। इस क्रम हम मानते हैं कि यह अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी निश्चय ही किसी नवीन एवं विशिष्ट सम्भावना को उद्भावित करेगी। बौद्ध-संस्कृत-साहित्य के अनुवाद, अनुसन्धान एवं विमर्शादि से निश्चय ही भारत का गौरव सर्वत्र प्रसारित होगा, हमारा दृढ़ विश्वास हैं।

सूचना—

बौद्ध-संस्कृत-साहित्य http://www.dsbcproject.org—नामक वेबसाईट पर अपलोड किया गया है, इससे काव्य देखें जा सकते हैं।

दरभंगास्थ-मिथिला-विद्यापीठ से बौद्ध-संस्कृत-ग्रन्थावली के अन्तर्गत बौद्ध-संस्कृत ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया है। वहाँ भी अपेक्षित सामग्री देखी जा सकती है।

श्रीरघुनाथ-कीर्ति-परिसर, देवप्रयाग में 'बौद्ध-संस्कृत-साहित्य संसाधन केन्द्र' की स्थापना की गई है। भविष्य में यहाँ से शोध-सामग्री प्राप्त की जा सकती है।

॥ शीर्षक-विवरण॥

काव्य-खण्ड

संस्कृत-साहित्य परम्परा में बौद्ध-संस्कृत-साहित्य का स्थान

विशुद्ध-संस्कृत-साहित्य

1. पद्य-काव्य

अश्वघोष के बुद्धचरितम् एवं सौन्दरनन्दम्, बुद्धघोष का पद्यचूडामणिः (सिद्धार्थचरितम्), शिवस्वामी का कप्फिणाभ्युदयम्, क्षेमेन्द्र का बोधिसत्त्वावदानमाला इत्यादि।

2. गद्य-साहित्य

बौद्ध-संस्कृत-साहित्य में गद्य-साहित्य प्रचुरता में उपलब्ध होता है।

3. चम्पू-साहित्य

कुमारलात का कल्पनामण्डतिका, आर्यशूर का जातकमाला तथा अज्ञातकर्तृक का दिव्यावदानं इत्यादि।

4. रूपक एवं उपरूपक

अश्वघोष के उर्वशीवियोगः एवं सारिपुत्रप्रकरणम् (विलुप्त), हर्षवर्धन का नागानन्दम् तथा अज्ञातकर्तृक का नालन्दादहनम् इत्यादि।

बौद्ध-मिश्रित-संस्कृत-साहित्य

1. नव महायान-सूत्र

अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता, सद्धर्मपुण्डरीक-सूत्रं, ललितविस्तरः, लंकावतार-सूत्रं, सुवर्णप्रभास-सूत्रं, गण्डव्यूह-सूत्रं, तथागतगुह्यक-सूत्रं, समाधिराज-सूत्रं तथा दशभूमीश्वर-सूत्रं।

2. अवदान-साहित्य

बोधिसत्त्वावदानमाला (जातकमाला), अवदानशतक, अवदानकल्पलता, दिव्यावदान, द्वात्रिंशत्यवदानमाला, कल्पद्रुमावदान, रत्नावदानमाला, विचित्रकर्णिकावदानमाला, चित्रितकर्णिकावदान, भद्रकल्पावदान इत्यादि-अवदान-साहित्य।

3. त्रिपिटकीय बौद्ध-संस्कृत-साहित्य

आधुनिक-बौद्ध-संस्कृत-साहित्य

1. काव्य—

सत्यव्रत-शास्त्री का श्रीबोधिसत्त्वचरितम्; आचार्य शान्तिभिक्षु शास्त्री का बुद्धविजयकाव्यम्, बुद्धोदयकाव्यम् तथा अशोकाभ्युदयकाव्यम्; पं. ओगेटि परीक्षित् शर्मा का यशोधरा-महाकाव्य; ओसकेरे-नागप्प शास्त्री का श्रीमद्बुद्धभागवतम्; डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल का महाबोधिद्रुमविजयम् तथा भदन्तसदानन्दचरितामृतम् इत्यादि।

2. रूपक एवं उपरूपक—

डा. वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य का सिद्धार्थचरितम्; डा. चन्द्रभानु त्रिपाठी का सुजाता; डा. मिथिलेश कुमारी मिश्रा का आम्रपाली; देवर्षि कलानाथ शास्त्री का महाभिनिष्क्रमणम्; रामजी उपाध्याय का नन्दगौतमीयम् एवं अशोकविजयम्; रामकुमार वर्मा (प्रो. राजेन्द्र मिश्र अनूदित) का विजयपर्व; डा. नारायण शास्त्री का 'अशोकस्य पराजयः' और 'कुणालस्य कुलीनता'; धर्मानन्द कोसम्बी (डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल अनूदित) का बोधिसत्त्वः इत्यादि।

3. गद्य-साहित्य (उपन्यासादि)—

1. 'अशोकन् पुरनाट्टुकरा' अनूदित उपन्यास महाप्रस्थानम्; 2. डा. एल्. सुलोचना देवी द्वारा अनूदित उपन्यास सिद्धार्थः, 3. भरतसिंह उपाध्याय के महाबुद्धवत्थु ग्रन्थ की प्रो. संघसेन सिंह तथा डॉ. मधुसूदन शर्मा द्वारा संस्कृत में लिखिता भूमिका; 4. मधुसूदन पेन्ना का करुणासमुद्रः गौतमबुद्धः इत्यादि।

4. स्फुट-काव्य

कवि/आचार्य-खण्ड

संस्कृत-साहित्य-परम्परा में बौद्ध संस्कृत-कवियों का योगदान

1. महाकवि

बुद्धचरित और सौन्दरनन्द के प्रणेता अश्वघोष; पद्यचूडामणिकार बुद्धघोष; कल्पनामण्डतिकाकार कुमारलात; कप्फिणाभ्युदयकार शिवस्वामी; बोधिसत्त्वावदानमालाकार क्षेमेन्द्र तथा अन्य कवि।

2. गद्यकार

बौद्ध-संस्कृत-साहित्य में गद्य-साहित्य प्रणेताओं का साहित्य बड़ी मात्रा में प्राप्त होता है।

3. रूपकाकार

मृच्छकटिककार शूद्रक तथा नागानन्दकार हर्षवर्धन

4. अल्पज्ञात बौद्धकवि

राजा धर्माशोक (राजतरंगिणी में उल्लेख) तथा अन्य कवि।

स्तोत्र/स्तव/-सुभाषित/नीति/-पत्र/लेख-खण्ड

संस्कृत-साहित्य-परम्परा में स्तोत्र-सुभाषित-पत्र काव्य

स्तोत्रकार

बुद्धगण्डीस्तवकार अश्वघोष, हेतुस्तवादि-स्तोत्रकार मातृचेट, चतुःस्तवकार नागार्जुन, बुद्धनिर्वाणस्तोत्रकार धर्मकीर्ति, स्रग्धरा-स्तोत्रकार सर्वज्ञमित्र, गण्डीस्तवकार आर्यदेव, मध्यमकशास्त्र-स्तुतिकार चन्द्रकीर्ति, सुप्रभातस्तोत्रकार हर्षवर्धन, अवलोकिते-श्वरस्तवकारा भिक्षुणी चन्द्रकान्ता, करुणास्तवकार बन्धुदत्ताचार्य, तारास्तुतिकार चन्द्रदास—अन्य स्तोत्रकार तथा स्तवकार।

सुभाषितकार/नीतिकार

शतगाथाकार वररुचि, शिष्यलेखाधर्मभाष्यकार चन्द्रगोमी, बोधिचर्यावतारकार शान्तिदेव, सुभाषितरत्नकारण्डककार और नीतिशास्त्रकार मसूराक्ष—अन्य बौद्ध सुभाषितकार/नीतिकार।

पत्र/लेखादि-साहित्य

सुहृल्लेखकार नागार्जुन, महाराज-कनिक-लेखकार मातृचेट, शिष्यलेखकार चन्द्रगोमी तथा चन्द्रराजलेखकार जगन्मित्रानन्दादि।

- स्तोत्र/स्तव/-सुभाषित/नीति/-पत्र/लेखादि साहित्य का वैशिष्ट्य तथा महत्त्व
- भोट तथा चीनी भाषाओं में अनूदित संस्कृतपत्र एवं लेख

दार्शनिककाव्य-खण्ड

संस्कृत-साहित्य-परम्परा में बौद्ध दार्शनिक-काव्य एवं उनके कर्ता

दार्शनिककाव्य प्रणेता—

1. दार्शनिक-साहित्य का परिचय—

बुद्धपालितकृत माध्यमिककारिका की 'आकुतोभया' टीका, भावविवेक की माध्यमिककारिका व्याख्या, शान्तरक्षित का तत्वसंग्रह, मैत्रेयनाथ का महायानसूत्रालंकार तथा अभिसमयालंकारकारिका, वसुबन्धु कृत अभिधर्मकोश तथा दिङ्नाग का प्रमाणसमुच्चय आदि।

2. दार्शनिक-कवियों का परिचय—

अश्वघोष, बुद्धपालित, भावविवेक, शान्तिदेव, शान्तरक्षित, आर्य असंग, वसुबन्धु, संघभद्र, दिङ्नाग, शंकरस्वामी, धर्मपाल, धर्मकीर्ति और चन्द्रगोमी।

3. दार्शनिक-ग्रन्थों में काव्य-तत्त्व

4. दार्शनिक-काव्यों का वैशिष्ट्य

काव्यशास्त्र-खण्ड

संस्कृत-काव्यशास्त्र-परम्परा में बौद्ध संस्कृत-काव्यशास्त्रियों का योगदान

काव्यशास्त्री आचार्य–

काव्यालंकारकार भामह, काव्यादर्शकार दण्डी, रामशर्मा, मेधावी तथा धर्मकीर्ति आदि।

बौद्धसिद्धान्तों का काव्यशास्त्र पर प्रभाव–

मध्यमा प्रतिपद् (यथाभूतप्रत्यवेक्षा); वस्तुध्वनि; बुद्धमत से शान्तरस का प्रादूर्भाव; प्रतीत्यसमुत्पाद के सन्दर्भ में रसावबोध।

छन्द-अलङ्कार-खण्ड

बौद्ध-संस्कृत-परम्परा में रचित छन्द एवं अलंकार ग्रन्थ

1. कलिकाल सर्वज्ञ रत्नाकर शान्तिपाद प्रणीत छन्दोरत्नाकर
2. संघरक्षित कृत सुबोधालंकार
3. शिलामेघसेन कृत स्वभाषालंकार (सियबसलकुर)
4. बौद्ध-काव्यशास्त्र ग्रन्थों का वैशिष्ट्य एवं महत्त्व

कोष-खण्ड

बौद्ध-संस्कृत-परम्परा में रचित कोष-ग्रन्थ

1. शब्दकोष

अमरसिंह का अमरकोष, महाव्युत्पत्ति, शब्दभेदप्रकाश तथा विश्वप्रकाश।

2. शास्त्रकोष

वसुबन्धु का अभिधर्मकोश, नागार्जुन का धर्मसंग्रह, धर्मसमुच्चय

टीका-व्याख्यादि-खण्ड

बौद्ध-संस्कृत परम्परा में रचित टीका-व्याख्यादि साहित्य

1. दण्डी के काव्यादर्श की रत्नश्रीज्ञान द्वारा कृत टीका
2. सद्धर्मपुण्डरीक-टीका
3. सूत्रालंकारवृत्ति-भाष्य
4. प्रमाण-समुच्चय-वृत्ति
5. बौद्ध-संस्कृत-व्याकरण-ग्रन्थों की टीका
6. अन्य टीका-व्याख्या-भाष्यादि साहित्य

अनुवाद-खण्ड

बौद्ध विद्वानों द्वारा संस्कृत-ग्रन्थों के भोट-चीनी आदि भाषाओं में अनुवाद

1. तिब्बत के विद्वान् अनुवादक
2. चीन के विद्वान् अनुवादक
3. भारतीय विद्वान् अनुवादक
4. विविध देशीय विद्वान् अनुवादक

पालि-साहित्य-खण्ड

पालि-साहित्य का काव्यशास्त्रीय मूल्यांकन

1. पद्यमय-साहित्य

1. तिपिटक के अन्तर्गत पद्य-साहित्य

2. अनागतवंसो, तेलकटाहगाथा, जिनालङ्कारो, जिनचरितं, पज्जमधु, सद्धम्मोपायनं, बुद्धालङ्कारो, पञ्चगतिदीपनं और लोकप्पदीपसारो (लोकदीपसारो) –इत्यादि साहित्य।

3. महावंस-दीपवंसादि-वंस-साहित्य

2. गद्य-साहित्य

1. तिपिटक के अन्तर्गत गद्य-साहित्य

2. सहस्सवत्थुप्पकरणं, राजाधिराजविलासिनी इत्यादि साहित्य।

3. चम्पू-साहित्य

1. तिपिटक के अन्तर्गत गद्य-पद्य मय चम्पू-साहित्य

2. रसवाहिनी तथा अन्य चम्पू साहित्य

4. पालि-साहित्य के साहित्य-शास्त्रीय ग्रन्थ

1. पालि छन्दःशास्त्रीय ग्रन्थ–'वुत्तोदयं' (वृत्तोदयम्)

2. पालि अलङ्कारशास्त्रीय ग्रन्थ–'सुबोधालङ्कारो'

3. पालि कोश साहित्य–

मोग्गलान का 'अभिधानप्पदीपिका' (अभिधानप्रदीपिका), सद्धम्मकीत्ति का 'एकक्खरकोसो' (एकाक्षरकोश)

बौद्धमत-सम्बद्ध पौराणिक-साहित्य-खण्ड

बौद्ध-संस्कृत परम्परा में पौराणिक साहित्य

1. पुराणों में बुद्धमत सम्बद्ध सन्दर्भ–

1. पुराणों में बुद्धवर्णन; 2. पुराणों में अशोकादि राजाओं का वर्णन; 3. पुराणों में बौद्धधम्म सम्बद्ध घटनाएँ; 4. महाभारत में बौद्धधम्म सम्बद्ध घटनाओं पर विमर्श; 5. रामायण बौद्धधम्म सम्बद्ध घटनाओं पर विमर्श

2. क्षेमेन्द्र के दशावतारचरित में भगवान् बुद्ध
3. जयदेव की अष्टपदी में बुद्धवर्णन

विविध-खण्ड

बौद्ध-विद्वानां का विविधशास्त्रों में योगदान

1. बौद्ध-संस्कृत-शास्त्र प्रणेता आचार्य
2. व्याकरण-ज्यौतिषादि-शास्त्र प्रणेता आचार्य
3. अभिलेखीय-बौद्धसंस्कृत-साहित्य
4. बौद्ध-संस्कृत-साहित्य के संवर्धन में आधुनिक-विद्वानों का योगदान

विशेष–विद्वान् इस संगोष्ठी के मुख्य विषय या उपविषय सम्बद्ध अन्य विषयों पर भी शोध-पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं।

संगोष्ठी-सम्बद्ध आवश्यक निर्देश तथा सूचनाएँ

1. संगोष्ठी-दिनाँक–30-31, जनवरी, 2019
2. शोधपत्र संस्कृत/पालि/हिन्दी/अंग्रेजी इन चार भाषा में प्रस्तुत किये जा सकते हैं।
3. शोधपत्र-सारांश तथा शोधपत्र prafullgadpal@gmail.com–इस ई-मेल एड्रेस पर भेजे जा सकते हैं।
4. शोध-पत्र यूनिकोड/कृतिदेव/वाक्मैन चाणक्य इत्यादि फाण्ट में टंकित होने चाहिए।
5. शोधपत्र-सारांश/शोधपत्र भेजने की अन्तिम तिथि – 10-01-2019
6. संगोष्ठी में भाग-ग्रहण करने के लिए पंजीकरण निःशुल्क होगा।
7. सभी प्रतिभागियों की भोजन-आवासादि व्यवस्था परिसर द्वारा उपकल्पित की जायेगी।
8. प्रतिभागियों द्वारा यात्राव्यय स्वयं वहन करना होगा।

संयोजक

डा. कृपाशंकर शर्मा

डा. प्रफुल्ल गड़पाल

अन्ताराष्ट्रिय-सङ्गोष्ठी (साहित्य-विभाग)

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान (सम-विश्वविद्यालय)

श्रीरघुनाथ-कीर्ति-परिसर

देवप्रयाग, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड - 249 301

मोबा.-94365 44326, 81264 85505

ई-मेल–prafullgadpal@gmail.com

आयोजक तथा अध्यक्ष

प्रो. के.बी.सुब्बरायुडु

प्राचार्य, राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम् (सम-विश्वविद्यालय)

श्रीरघुनाथ-कीर्ति-परिसर

देवप्रयाग, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड - 249 301

दूरवाणी-01375 266028

ई-मेल–srkcampus@gmail.com